

नवभारत

संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

गाजियाबाद के लोनी इलाके में भारत सिटी सोसायटी से सामने आई तीन सगी बहनों की सामूहिक आत्महत्या की घटना केवल एक आपराधिक या पारिवारिक त्रासदी नहीं है, बल्कि यह हमारे समय के सबसे खतरनाक सामाजिक संकट की चेतावनी है. हाल ही में घटी यह घटना देश के हर माता-पिता, शिक्षक और नीति-निर्माता को झकझोरने वाली है. यह सवाल अब टाला नहीं जा सकता कि क्या हम अपने बच्चों को स्मार्टफोन के हाथों खोते जा रहे हैं. टनिशिका, प्राची और पाखी. तीन नाम, तीन मासूम चेहरे और एक जैसी नियति. पुलिस की प्रारंभिक जांच में सामने आया तथ्यांक 'कोरियाई लव गेम' केवल एक गेम नहीं था, बल्कि एक मानसिक जाल था, जिसने किशोर मन को वास्तविक दुनिया से काट दिया.

टास्क-वेरड ऑनलाइन गेमिंग, काल्पनिक पहचान, और आभासी भावनात्मक

डिजिटल दुनिया का अंधेरा और टूटा बचपन

लगाव. ये सब मिलकर बच्चों को एक ऐसी दुनिया में ले जाते हैं, जहां असफलता का अर्थ जीवन का अंत बताया जाता है. सबसे चिंताजनक तथ्य यह है कि ये तीनों बहनें कोविड काल से स्कूल से दूर थीं. यानी शिक्षा, मित्रता, खेलकूद और सामाजिक संवाद से कटाव. इसकी जगह स्क्रीन ने ले ली. स्मार्टफोन उनके लिए खिलौना नहीं, बल्कि दुनिया बन गया. जब माता-पिता ने फोन छीना, तो वह केवल एक डिवाइस नहीं गया, बल्कि उनकी 'आभासी पहचान' टूट गई. यही टूटन आत्महत्या जैसे भयावह कदम में बदल गई. यह घटना हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या केवल बच्चों को दोष देना पर्याप्त है. उतर साफ है. नहीं. असल जिम्मेदारी समाज और पालकों की है.

आज स्मार्टफोन कई घरों में 'डिजिटल आया' बन चुका है. बच्चा चुप रहे, इसके लिए फोन पकड़ा दिया जाता है. लेकिन वही फोन कब जहर बन जाएगा. इसका अंदाजा तब लगता है जब बहुत देर हो चुकी होती है. ऑनलाइन गेमिंग की लत एक गंभीर मानसिक स्वास्थ्य समस्या है. यह धीरे-धीरे नींद, पढ़ाई, व्यवहार और भावनात्मक संतुलन को नष्ट करती है. बच्चे आभासी दुनिया को असली समझने लगते हैं. वहां मिलने वाली तारीफ, रैंकिंग और टास्क उनके आत्मसम्मान का आधार बन जाते हैं. वास्तविक दुनिया की डांट, अनुशासन या सीमाएँ उन्हें असहनीय लगने लगती हैं. यहां सरकार और टेक कंपनियों की भूमिका भी सवालियों के घेरे में है. भारत में अभी

भी ऑनलाइन गेमिंग और बच्चों के डिजिटल कंटेंट पर सख्त निगरानी का अभाव है. माता-पिता को यह तक नहीं पता होता कि बच्चा कौन सा गेम खेल रहा है, किससे बात कर रहा है. और किन मानसिक निर्देशों के प्रभाव में है. अब समय आ गया है कि पालक 'डिजिटल साक्षरता' को अपनी ही गंभीरता से लें जितनी शिक्षा को. बच्चों से संवाद, उनके दोस्तों और ऑनलाइन गतिविधियों की जानकारी, समय सीमा और भावनात्मक सहायता. यह सब अनिवार्य होना चाहिए. डांट और प्रतिबंध के साथ-साथ विश्वास और बातचीत भी जरूरी है.

लोनी की यह घटना एक चेतावनी है. अगर अब भी हम नहीं चेते, तो स्क्रीन के इस अंधेरे में न जाने कितने बचपन बुझते चले जाएंगे. स्मार्टफोन स्मार्ट तभी है, जब उसका इस्तेमाल समझदारी से हो. वरना वह रिशतों, संवेदनाओं और जीवन तौनों को निगल सकता है.

बजट में विकसित भारत की दिशा परिलक्षित



प्रो. शिवकानंद तिवारी अध्यक्ष, आभेडकर पीठ एचपीयू, शिमला

नए भारत की आवश्यकताओं और भविष्य की संभावनाओं को ध्यान में रखकर प्रस्तुत किया गया यह बजट समावेशी विकास की स्पष्ट झलक देता है. ई-फ्रास्ट्रक्चर, टेक्नोलॉजी, हरित

वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए प्रस्तुत किए गए बजट की कुछ मुख्य विशेषताओं में वित्तीय अनुशासन का अनुपालन किया जाना भी शामिल है. बजटीय घाटे को 4.5 प्रतिशत के अंदर रखने का प्रयास सफल रहा है. वित्तीय वर्ष 2025-26 में बजटीय घाटे को सकल घरेलू उत्पाद का 4.4 प्रतिशत रखने में सफलता हासिल हुई है. जबकि, अमेरिका जैसे विकसित देश में भी आज बजटीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद के 6 प्रतिशत से अधिक है. वित्तीय वर्ष 2026-27 में बजटीय घाटे को कम करते हुए इसे 4.3 प्रतिशत तक नीचे लाने का प्रयास किया जा रहा है, हालांकि वित्तीय वर्ष 2026-27 के दौरान पूंजीगत खर्चों में 1.1 लाख करोड़ रुपए की वृद्धि भी प्रस्तावित है.

ऊर्जा, शिक्षा और स्वास्थ्य पर फोकस के साथ यह बजट विकास को जमीनी स्तर तक पहुंचाने का भरपूर संकेत है. आर्थिक सुधारों और नीतिगत स्पष्टता के माध्यम से यह बजट भारत को वैश्विक मंच पर और अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने की दिशा में प्रभावी भूमिका निभाएगा. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन में यह बजट विकसित भारत के लक्ष्य को साकार करने का सशक्त आधार है. नए हाईस्पीड रेल कॉरिडोर, बायोफार्मा, पर्यटन, रेयर अर्थ मिनेरल्स और सेमी कंडक्टर निर्माण जैसे क्षेत्र शामिल हैं. विशेषज्ञ इसे भविष्य के ध्यान में रखकर उद्यम गैर कदम बता रहे हैं.

भारत के भविष्य को ध्यान में रखकर बनाया गया है इस वर्ष का बजट दिनांक 1 फरवरी 2026 को, रविवार के दिन, भारत की वित्तमंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन ने भारतीय संसद में वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए बजट पेश किया. इस बजट में की गई

सोपणाओं के माध्यम से वैश्विक स्तर पर घटित हो रही उथल पुथल से भारत को बचाने की पुरजोर कोशिश की गई दिखती है. अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रम्प अपने द्वितीय कार्यकाल में वर्ष 2025 के दौरान पूरे वर्षभर लगातार कई देशों के अमेरिकी का होने वाले निर्यात पर टैरिफ की घोषणाएं की जाती रहीं एवं इसके विरोध स्वरूप कुछ देशों ने अमरीका से इन देशों को होने वाले निर्यात पर प्रतिकारी टैरिफ को अघात एवं की घोषणाएं की जाती रहीं. चीन ने तो प्रतिशोध में अमेरिका को दुर्लभ खनिज पदार्थों की आपूर्ति ही रोक दी थी. हालांकि इसके पूर्व अमेरिका ने भी चीन को सेमीकंडक्टर एवं चिप्स की आपूर्ति को प्रभावित करने का प्रयास किया था. कुल मिलाकर, कुछ देश तो निर्यात पर प्रतिकारी वस्तुओं के आयात एवं निर्यात को रोकने के प्रयत्न करते रहे. इन सभी घोषणाओं से वैश्विक स्तर पर विशेष रूप से आर्थिक क्षेत्र में माहौल विपरीत रूप

से प्रभावित होता रहा. ट्रम्प प्रशासन ने भारत से अमेरिका को होने वाले विभिन्न वस्तुओं के निर्यात पर भी 50 प्रतिशत टैरिफ लगा दिया है, जो अमेरिका द्वारा विभिन्न देशों से अमेरिका को होने वाले निर्यात पर लगाए गए टैरिफ में संभवतः आठ अन्य देशों की तुलना में सबसे अधिक है.

इस वित्तीय वर्ष के बजट में तीन कर्तव्यों को ध्यान में रखा गया है. (1) विभिन्न क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करते हुए भारत की आर्थिक विकास दर को और अधिक तेज किया जाय ताकि भारत को वैश्विक स्तर पर चल रही उथल पुथल से बचाया जा सके; (2) भारतीय युवाओं में कौशल का विकास करना ताकि तकनीकी क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर हो रहे परिवर्तनों के लिए वे अपने आप को तैयार कर सकें; (3) देश में समावेशी विकास हो सके एवं भारत के संसाधनों का उपयोग समस्त नागरिकों की भलाई में किया जा सके और कोई भी

नागरिक, नगर एवं राज्य आर्थिक विकास की धारा से बाहर नहीं रहे.

वैश्विक स्तर पर उक्त वर्णित परिस्थितियों के बीच भी भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बनी रही. परंतु, भारत की विकास दर की इस गति को आगामी वर्षों में भी बनाए रखने के उद्देश्य से वित्तीय वर्ष 2026-27 के बजट में कई महत्वपूर्ण घोषणाएं की गई हैं. भारत आज दुर्लभ खनिज पदार्थों तथा सेमीकंडक्टर एवं चिप्स का भारी मात्रा आयात करता है. चिप्स को तो आज के उत्पादों के निर्माण में तेल की भूमिका के रूप में देखा जा रहा है. इन दोनों पदार्थों पर चीन एवं अमेरिका का लगभग पूर्णतः एकाधिकार है. भारत अपने आप को इन क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनाना चाहता है, इस दृष्टि से बजट में भारत में ही दुर्लभ खनिज पदार्थों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए ओडिसा, केरल, तमिलनाडु एवं आन्ध्रप्रदेश स्थित खदानों में से कच्चे माल को निकालकर इसे संसाधित करते हुए भारत में ही दुर्लभ खनिज पदार्थों के निर्माण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बजट में उक्त चारों राज्यों में एक कोरिडोर बनाने की घोषणा की गई है. इसी प्रकार, भारत में ही सेमीकंडक्टर एवं चिप्स के निर्माण हेतु विभिन्न इकाइयों की स्थापना को प्रोत्साहन देने के लिए बजट में कई उपायों की घोषणा की गई है एवं इस हेतु 40,000 करोड़ रुपए की राशि का प्रावधान भी किया गया है.

सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव से कैसे बचें?

बच्चों व किशोरों में डिजिटल एडिक्शन बढ़ता जा रहा है, जिसका मानसिक स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है. अभिभावकों, शिक्षकों तथा मीडिया प्लेटफार्मों की जिम्मेदारी है कि मोबाइल व लैपटॉप स्क्रीन तथा वास्तविक दुनिया के बीच संतुलन बनाए रखें. विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्मों से उपलब्ध होने वाली विविधापूर्ण कंटेंट में युवा इतने खो जाते हैं कि उन्हें समय का भान ही नहीं रहता. यह बढ़ता हुआ स्क्रीन टाइम उनके अध्ययन, नींद तथा प्रत्यक्ष सामाजिक संघर्ष में बाधक होता है. सोशल मीडिया की हर क्षण में गहरी पैठ हो गई है चाहे सौंदर्य संबंधी मानदंड हो या करियर से संबंधित जानकारी, युवा उस आभासी दुनिया में व्यस्त हो जाते हैं. उसी के आधार पर वह स्वयं का व दूसरों का मूल्यांकन करने लगते हैं. उनकी एकग्रता पर बुरा असर पड़ता है. बेचैनी बढ़ जाती है तथा वह घंटों स्क्रीन से चिपके रहना पसंद करते हैं. आज की शिक्षा प्रणाली में मीडिया लिटरीसी या माध्यम साक्षरता अनिवार्य हो गई है, लेकिन इसका इस्तेमाल सजनात्मकता, विरोधनात्मक चिंतन और नवोन्मेष के लिए होना चाहिए. सोशल मीडिया की सार्थकता इसमें है कि वह

सही जीवनशैली, जीवन मूल्यों व नैतिकता की ओर ले जाए. इसके लिए सोशल मीडिया प्लेटफार्मों की जिम्मेदारी तय करनी होगी. युवा उपयोगकर्ताओं के लिए स्पष्ट तथा उनके आयु समूह के अनुसार कठोर मार्गदर्शक नियम तय करने होंगे. इसके लिए नियमित एजुकेशन तथा अभिभावकों के नियंत्रण की जरूरत पड़ेगी. रेगुलेटर्स से भी सहयोग लेना पड़ेगा ताकि वह सही कंटेंट दें. यह बेहद जरूरी हो गया है कि युवा वर्ग वास्तविक जगत की गतिविधियों जैसे कि खेल व पुस्तक अध्ययन में रुचि ले. बाहरी कार्यकलापों में संलग्नता से युवाओं में आपसी सहयोग, समस्याओं व चुनौतियों को हल करने, निर्णय क्षमता को बढ़ाने में मदद मिलती है तथा उनका रचनात्मक बनना है. दृढ़ विचारों के प्रत्यक्ष आदान-प्रदान से वह अपनी क्षमता व शक्ति पहचानने लगते हैं जिससे वह जीवन में सफलता हासिल कर सकें. सोशल मीडिया को समाज नहीं किया जा सकता लेकिन उसके दुष्प्रभावों को नियंत्रित किया जा सकता है. ऐसा होने पर युवा अपने लिए जरूरी हुनर को हासिल करने की दिशा में प्रवृत्त होंगे.

27 रुपये रोज पर जी रहा किसान क्या उस पर है किसी का ध्यान

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हमारे देश का अन्नदाता और वस्त्रदाता किसान गरीबी और कर्ज के दलदल में बुरी तरह फंसा हुआ है. राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) के मुताबिक विशुद्ध कृषि आय को देखा जाए तो भारतीय किसान केवल 27 रुपये रोज पर गुजारा कर रहा है.'

हमने कहा, 'यह मत भूलिए कि प्रधानमंत्री मोदी ने किसानों के लिए 6,000 रुपये साल की मदद दे रखी है. पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने देशवासियों को 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया था. इससे प्रभावित होकर मनोज कुमार ने खेती-किसानी पर 'उपकार' नामक फिल्म बनाई थी, जिसका गीत था- मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरे मोती! शास्त्री के नारे में पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी ने पुछल्ला लगाकर उसे जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान बना दिया था. पुरानी फिल्में देखिए जिनमें किसान हल चलाते हैं, नाचते-गाते हैं और घुरते उनके खेत में फसल लहलहाते लगती हैं. उपन्यास सम्राट मुंशी



बढ़ोतरी की गई है जो रुपये की गिरावट और महंगाई की मार में ही खप जाएगी. किसानों की आय घटने के कारणों को सुधारने की बजट में कोशिश नहीं की गई. किसान कर्ज में पंदा होता है और कर्ज में ही मरता है. महाराष्ट्र और खासकर विदर्भ में हजारों किसानों ने कर्ज के बोझ और अपमानजनक तकाजे से तंग आकर आत्महत्या की है. जब वे कठोर परिश्रम से अच्छे पैदावार करते हैं तो फसलों का उचित दाम नहीं मिलता. टमाटर और प्याज सड़क पर फेंकने की नौबत आ जाती है. आपको याद होगा कि दिल्ली में किसान आंदोलन कितनी बेदरती से कुचला गया था.'

हमने कहा, 'यदि भारत-अमेरिका व्यापार समझौते में भारत का कृषि क्षेत्र अमेरिका के लिए खोल दिया गया तो अपने किसान और बर्बाद हो जाएंगे. ट्रंप अपना सरला कार्न (मक्का) और डेयरी प्रॉडक्ट भारत में खपाएंगे. अमेरिका में किसानों को भारी सब्सिडी दी जाती है ताकि वह खेती करना छोड़कर नौकरी करने शहरों में न आ जाएं, इसके विपरीत हमारा किसान भगवान भरसे है.'

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12163 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4	5	6
7				8	
		9			
		10			11
12					
				13	
14				15	
16					18
				17	
					20

1. पृथ्वी, वसुधा (सं.) 2. शालि जिसमें से चावल निकलता है 3. खाना बनाने की कला 4. लगातार व्यर्थ की बातें करना 5. आम (सं.) 6. चरमराने की आवाज, चरम ध्वनि 10. बुरा व्यवहार, असभ्य आचरण 11. मुकुट (उर्दू) 12. प्रतिकारक, मार डालने वाला (सं.) 13. मुंह, चेहरा (सं.) 15. शूर, योद्धा 17. नगर, गांव 18. बहुत बड़ा, सर्वश्रेष्ठ, अत्यधिक (सं.)

बाएं से दाएं

1. जनहित के लिए संघर्षरत प्रसिद्ध महिला 7. सूर्य, रवि, अरुण (सं.) 8. आदर सहित 9. एक बड़ा फल जिसकी सब्जी और अचार बनाया जाता है 10. लाड़ला 11. नक्षत्र, सितारा 12. पीढ़ी, प्रवृत्त, जिस पर मार पड़ी हो 13. कारण (उर्दू) 14. निर्माण, सृजन, साहित्यिक कृति 15. व्याज 16. हाथ, किरण (सं.) 17. नमीयुक्त, भीगा (उर्दू) 19. लक्ष्मी 20. शराब, मद्य (सं.)

ऊपर से नीचे

Solution 12162

आ	लौ	शा	न	चं	गु	ल
म	द	न	वे	द	ना	
झ	दा	स	ता	ह	म	
ति	र	पा	ल	गा	दी	
खा	रा	ट	झ	र	ना	
न	हा	ना	मा	ल		
दा	का	पा	लि	क	पा	
न	र	म	क	ना	ग	त

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में सामाजिक कार्यों में संलग्नता रहेगी, व्यवसाय में वृद्धि होगी, राजनैतिक लाभ होगा, वर्ष के मध्य में व्यवसाय की स्थिति में सुधार होगा, आय के अन्य स्रोतों में वृद्धि होगी, पूर्व परिचित से भेंट होगी, सफलता मिलेगी, मन प्रसन्न रहेगा, वर्ष के अंत में अनावश्यक विवाद से मन खिन्न रह सकता है, स्थान परिवर्तन का योग है. मेघ और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों के व्यवसाय में वृद्धि होगी, राजनैतिक

आज जन्म शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, दुबला पतला, लम्बे कद का होगा. शिक्षा उत्तम रहेगी. लेखन, अध्ययन में इनकी रुचि रहेगी. पारिवारिक दायित्वों के प्रति इनका लगाव रहेगा. माता पिता के प्रति आस्थावान रहेगी.

उत्पत्तिकालीन ग्रह चाल

8	के.7 सू. चं.गु.	6	शु.	5
9	10	4	मं.	3
11	12	1	तु.	2

पंचांग

रा.मि. 17 संवत् 2082 फल्गुन कृष्ण पंचमी भृगुवासरें रात 2/27, हस्त नक्षत्रें रात 1/42, धृति योगे रात 1/7, कौलव करणे सू.उ. 6/31, सू.अ. 5/29, चन्द्रचार कन्या, शु.रा. 6,8,9,12,1,4 अ.रा. 7,10,11,2,3,5 शुभांक-8,0,5.

व्यापार भविष्य

फल्गुन कृष्ण पंचमी को हस्त नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी गुड, खांड, तांबा, धातु, रूई, कपास, सन, हैसियत, जूरा, धनिया एवं किराने की वस्तुओं में नरमी का रूख रहेगा. सरसों, अरंडी, ची के भाव में तेजी होगी. भार्यांक 1409 है.

SUDOKU 7295

7	4	6	1	8	2
5		8	7		
9		6			
6	7	9	5	3	
5		4			1
3	1	8	2	7	
		5			6
4	3	2	1	5	7

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति व ही इसका विशेष ध्यान रखें. पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. पहली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोड़ 7294

8	7	9	4	2	5	6	1	3
5	6	3	8	1	7	4	2	9
4	1	2	6	9	3	5	8	7
1	9	8	3	7	4	2	6	5
7	3	4	2	5	6	8	9	1
2	5	6	1	8	9	7	3	4
9	8	5	7	3	2	1	4	6
6	2	7	9	4	1	3	5	8
3	4	1	5	6	8	9	7	2